॥ ॐ ॥ 668

प्रश्नोत्तरी

स्वामिश्रीशङ्कराचार्यरचित

म णि र त्न मा ला

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥ 729▲

सार-संग्रह

एवं

सत्संगके अमृत-कण

स्वामी रामसुखदास

'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर-२७३००५	गीताप्रेस—पो० गीताप्रेस website:www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org	✆ (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स २३३६९९७
दिल्ली-११०००६	२६०९, नयी सड़क	✆ (०११) २३२६९६७८; फैक्स २३२५९१४०
कोलकाता-७००००७	गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड e-mail:gobindbhawan@gitapress.org	✆ (०३३) २२६८६८९४ ; फैक्स २२६८०२५१
मुम्बई-४००००२	२८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट) मरीन लाईन्स स्टेशनके पास	✆ (०२२) २२०३०७१७
कानपुर-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	✆ (०५१२) २३५२३५१; फैक्स २३५२३५१
पटना-८००००४	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने	✆ (०६१२) २३००३२५
राँची-८३४००१	कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर	✆ (०६५१) २२१०६८५
सूरत-३९५००१	वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड e-mail: suratdukan@gitapress.org	✆ (०२६१) २२३७३६२, २२३८०६५
इन्दौर-४५२००१	जी० ५, श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग	✆ (०७३१) २५२६५१६, २५११९७७
जलगाँव-४२५००१	७, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास	✆ (०२५७) २२२६३९३
हैदराबाद-५०००९५	४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	✆ (०४०) २४७५८३११
नागपुर-४४०००२	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड	✆ (०७१२) २७३४३५४
कटक-७५३००९	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	✆ (०६७१) २३३५४८१
रायपुर-४९२००९	मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक	✆ (०७७१) ४०३४४३०
वाराणसी-२२१००१	५९/९, नीचीबाग	✆ (०५४२) २४१३५५१
हरिद्वार-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	✆ (०१३३४) २२२६५७
ऋषिकेश-२४९३०४	गीताभवन, पो० स्वर्गाश्रम e-mail:gitabhawan@gitapress.org	✆ (०१३५) २४३०१२२, २४३२७९२
कोयम्बटूर-६४१०१८	गीताप्रेस मेंशन, ८/१ एम, रेसकोर्स	✆ (०४२२) ३२०२५२१
बेंगलोर-५६००२७	१५, फोर्थ 'इ' क्रास, के० एस० गार्डेन, लालबाग रोड	✆ (०८०) २२९५५१९०, ३२४०८१२४

स्टेशन-स्टाल— दिल्ली (प्लेटफार्म नं० १२); नयी दिल्ली (नं० १२-१३); हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० ४-५); कोटा [राजस्थान] (नं० १); बीकानेर (नं० १); गोरखपुर (नं० १); कानपुर (नं० १); लखनऊ [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० ४-५); मुगलसराय (नं० ३-४); हरिद्वार (नं० १); पटना (मुख्य प्रवेशद्वार); राँची (नं० १); धनबाद (नं० २-३); मुजफ्फरपुर (नं० १); समस्तीपुर (नं० २); हावड़ा (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); कोलकाता (नं० १); सियालदा मेन (नं० ८); आसनसोल (नं० ५); कटक (नं० १); भुवनेश्वर (नं० १); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० १); सिकन्दराबाद [आं० प्र०] (नं० १); गुवाहाटी (नं० १); खड़गपुर (नं० १-२); रायपुर [छत्तीसगढ़] (नं० १); बेंगलोर (नं० १); यशवन्तपुर (नं० ६); श्री सत्यसाई प्रशान्ति निलयम् [दक्षिण-मध्य रेलवे] (नं० १) एवं अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।

फुटकर पुस्तक-दूकानें

चूरू-३३१००१	ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क ✆ (०१५६२) २५२६७४
ऋषिकेश-२४९१९२	मुनिकी रेती
तिरुपति-५१७५०४	शॉप नं० ५६, टी० टी० डी० मिनी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, तिरुमलाई हिल्स
बेरहामपुर-७४२१०१	म्युनिसिपल मार्केट काम्प्लेक्स, ब्लाक-बी, स्टाल नं० ५७—६०, प्रथम तल, के० एन० रोड (मुर्शिदाबाद)

ISBN 81-293-0583-6

Code 729▲

॥ श्रीहरिः ॥

729▲

सार-संग्रह
एवं
सत्संगके अमृत-कण

स्वामी रामसुखदास

॥ श्रीहरिः ॥

सार-संग्रह

~~~

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-सार

अध्याय

१. सांसारिक मोहके कारण ही मनुष्य 'मैं क्या करूँ और क्या नहीं करूँ'—इस दुविधामें फँसकर कर्तव्यच्युत हो जाता है। अतः मोह या सुखासक्तिके वशीभूत नहीं होना चाहिये।

२. शरीर नाशवान् है और उसे जाननेवाला शरीरी अविनाशी है—इस विवेकको महत्त्व देना
~~~

और अपने कर्तव्यका पालन करना—इन दोनोंमेंसे किसी भी एक उपायको काममें लानेसे चिन्ता-शोक मिट जाते हैं।

३. निष्कामभावपूर्वक केवल दूसरोंके हितके लिये अपने कर्तव्यका तत्परतासे पालन करनेमात्रसे कल्याण हो जाता है।

४. कर्मबन्धनसे छूटनेके दो उपाय हैं—कर्मोंके तत्त्वको जानकर निःस्वार्थभावसे कर्म करना और तत्त्वज्ञानका अनुभव करना।

५. मनुष्यको अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियोंके आनेपर सुखी-

दुःखी नहीं होना चाहिये; क्योंकि इनसे सुखी-दुःखी होनेवाला मनुष्य संसारसे ऊँचा उठकर परम आनन्दका अनुभव नहीं कर सकता।

६. किसी भी साधनसे अन्तःकरणमें समता आनी चाहिये। समता आये बिना मनुष्य सर्वथा निर्विकार नहीं हो सकता।

७. सब कुछ भगवान् ही हैं—ऐसा स्वीकार कर लेना सर्वश्रेष्ठ साधन है।

८. अन्तकालीन चिन्तनके अनुसार ही जीवकी गति होती है।

अतः मनुष्यको हरदम भगवान्का स्मरण करते हुए अपने कर्तव्यका पालन करना चाहिये, जिससे अन्तकालमें भगवान्की स्मृति बनी रहे।

९. सभी मनुष्य भगवत्प्राप्तिके अधिकारी हैं, चाहे वे किसी भी वर्ण, आश्रम, सम्प्रदाय, देश, वेश आदिके क्यों न हों!

१० संसारमें जहाँ भी विलक्षणता, विशेषता, सुन्दरता, महत्ता, विद्वत्ता, बलवत्ता आदि दीखे उसको भगवान्का ही मानकर भगवान्का ही चिन्तन करना चाहिये।

११. इस जगत्को भगवान्का ही स्वरूप मानकर प्रत्येक मनुष्य भगवान्के विराट्रूपके दर्शन कर सकता है।

१२. जो भक्त शरीर-इन्द्रियाँ-मन-बुद्धिसहित अपने-आपको भगवान्के अर्पण कर देता है, वह भगवान्को प्रिय होता है।

१३. संसारमें एक परमात्मतत्त्व ही जानने योग्य है। उसको जाननेपर अमरताकी प्राप्ति हो जाती है।

१४. संसार-बन्धनसे छूटनेके लिये सत्त्व, रज और तम—इन तीनों गुणोंसे अतीत होना जरूरी है।

अनन्यभक्तिसे मनुष्य इन तीनों गुणोंसे अतीत हो जाता है।

१५. इस संसारका मूल आधार और अत्यन्त श्रेष्ठ परमपुरुष एक परमात्मा ही हैं—ऐसा मानकर अनन्यभावसे उनका भजन करना चाहिये।

१६. दुर्गुण-दुराचारोंसे ही मनुष्य चौरासी लाख योनियों एवं नरकोंमें जाता है और दुःख पाता है। अतः जन्म-मरणके चक्रसे छूटनेके लिये दुर्गुण-दुराचारोंका त्याग करना आवश्यक है।

१७. मनुष्य श्रद्धापूर्वक जो भी शुभ कार्य करे, उसको भगवान्‌का स्मरण करके, उनके नामका उच्चारण करके ही आरम्भ करना चाहिये।

१८. सब ग्रन्थोंका सार वेद हैं, वेदोंका सार उपनिषद् हैं, उपनिषदोंका सार गीता है और गीताका सार भगवान्‌की शरणागति है। जो अनन्यभावसे भगवान्‌की शरण हो जाता है, उसे भगवान् सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर देते हैं।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

मूल-रामायण

(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्डसे)

अब श्रीराम कथा अति पावनि।
सदा सुखद दुख पुंज नसावनि॥
सादर तात सुनावहु मोही।
बार बार बिनवउँ प्रभु तोही॥
सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता।
सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता॥
भयउ तासु मन परम उछाहा।
लाग कहै रघुपति गुन गाहा॥
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी।
रामचरित सर कहेसि बखानी॥

पुनि नारद कर मोह अपारा।
कहेसि बहुरि रावन अवतारा॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई।
तब सिसु चरित कहेसि मन लाई॥

दो०-बालचरित कहि बिबिधि बिधि मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिबाह॥

(उ० का० ६४)

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा।
पुनि नृप बचन राज रस भंगा॥
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा।
कहेसि राम लछिमन संबादा॥
बिपिन गवन केवट अनुरागा।
सुरसरि उतरि निवास प्रयागा॥
बालमीक प्रभु मिलन बखाना।
चित्रकूट जिमि बसे भगवाना॥

सचिवागवन नगर नृप मरना।
भरतागवन प्रेम बहु बरना॥
करि नृप क्रिया संग पुरबासी।
भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी॥
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाए।
लै पादुका अवधपुर आए॥
भरत रहनि सुरपति सुत करनी।
प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी॥

दो॰-कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग॥

(उ॰ का॰ ६५)

कहि दंडक बन पावनताई।
गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई॥
पुनि प्रभु पंचबटीं कृत बासा।
भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा॥

पुनि लछिमन उपदेस अनूपा।
सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा॥
खर दूषन बध बहुरि बखाना।
जिमि सब मरमु दसानन जाना॥
दसकंधर मारीच बतकही।
जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही॥
पुनि माया सीता कर हरना।
श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना॥
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही।
बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही॥
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा।
जेहि बिधि गए सरोबर तीरा॥

दो॰-प्रभु नारद संबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग॥

(उ॰ का॰ ६६ क)

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास।
बरनन बर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास॥

(उ० का० ६६ ख)

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए।
सीता खोज सकल दिसि धाए॥
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती।
कपिन्ह बहोरि मिला संपाती॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा।
नाघत भयउ पयोधि अपारा॥
लंकाँ कपि प्रबेस जिमि कीन्हा।
पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा॥
बन उजारि रावनहि प्रबोधी।
पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी॥
आए कपि सब जहँ रघुराई।
बैदेही की कुसल सुनाई॥

सेन समेति जथा रघुबीरा।
उतरे जाइ बारिनिधि तीरा॥
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई।
सागर निग्रह कथा सुनाई॥

दो०-सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार॥

(उ० का० ६७ क)

निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिधि प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार॥

(उ० का० ६७ ख)

निसिचर निकर मरन बिधि नाना।
रघुपति रावन समर बखाना॥
रावन बध मंदोदरि सोका।
राज बिभीषन देव असोका॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी।

सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता।
अवध चले प्रभु कृपा निकेता॥
जेहि बिधि राम नगर निज आए।
बायस बिसद चरित सब गाए॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका।
पुर बरनत नृपनीति अनेका॥
कथा समस्त भुसुंड बखानी।
जो मैं तुम्ह सन कही भवानी॥
सुनि सब राम कथा खगनाहा।
कहत बचन मन परम उछाहा॥

सो०-गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक॥
(उ० का० ६८ क)
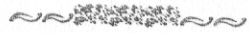
॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

मूल भागवत

श्रीभगवानुवाच

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद् विज्ञानसमन्वितम्।
सरहस्यं तदङ्गं च गृहाण गदितं मया॥

श्रीभगवान् बोले—ब्रह्माजी! मेरा जो अत्यन्त गोपनीय विज्ञानसहित ज्ञान है, वह तथा रहस्यसहित उसके अंग मेरे द्वारा कहे गये हैं, उसको तुम ग्रहण करो अर्थात् धारण करो।

यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः।
तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात्॥

मैं जितना हूँ, जिन-जिन भावोंवाला हूँ, जिन-जिन रूपों, गुणों और कर्मोंवाला हूँ, उस मेरे समग्ररूपके तत्त्वका यथार्थ अनुभव तुम्हें मेरी कृपासे ज्यों-का-त्यों हो जाय।

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परम्।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम्॥

सृष्टिसे पहले भी मैं ही विद्यमान था, मेरे सिवाय और कुछ भी नहीं था और सृष्टि उत्पन्न होनेके बाद जो कुछ भी यह संसार दीखता है वह भी मैं ही हूँ। सत् (चेतन, अविनाशी) असत् (जड, नाशवान्) तथा सत्-असत्से परे जो कुछ कल्पना की जा सकती है, वह भी मैं ही हूँ। सृष्टिके सिवाय भी जो कुछ है, वह मैं ही हूँ और सृष्टिका नाश होनेपर जो शेष रहता है, वह भी मैं ही हूँ।

ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि।
तद् विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः॥

जैसे कोई वस्तु बिना होते हुए भी अज्ञानरूप अन्धकारके कारण प्रतीत होती है, ऐसे ही संसार न होते हुए भी मेरेमें प्रतीत होता है और जैसे ज्ञानरूप प्रकाश होते हुए भी उधर दृष्टि न रहनेसे प्रतीत नहीं होता अर्थात् अनुभवमें नहीं आता, ऐसे ही मैं होते हुए भी नहीं दीखता ये दोनों (संसारका विद्यमान न होते हुए भी दीखना और मेरा विद्यमान होते हुए भी न दीखना) मेरी माया है—ऐसा समझना चाहिये।

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्॥

जिस तरह पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश—ये पाँचों महाभूत प्राणियोंके

छोटे-बड़े, अच्छे-बुरे सभी शरीरोंमें प्रविष्ट होते हुए भी वास्तवमें प्रविष्ट नहीं हैं अर्थात् वे-ही-वे हैं, उसी तरह मैं उन प्राणियोंमें प्रविष्ट होते हुए भी वास्तवमें उनमें प्रविष्ट नहीं हूँ अर्थात् मैं-ही-मैं हूँ।

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा॥

मुझ परमात्माके तत्त्वको जाननेकी इच्छावाले साधकको अन्वय और व्यतिरेक रीतिसे अर्थात् संसारमें मैं हूँ और मेरेमें संसार है—ऐसे अन्वयरीतिसे तथा न संसारमें मैं हूँ और न मेरेमें संसार है, प्रत्युत मैं-ही-मैं हूँ—ऐसे व्यतिरेकरीतिसे इतना ही जानना आवश्यक है कि सब जगह और सब समयमें मैं परमात्मा ही विद्यमान हूँ अर्थात मेरे सिवाय कुछ भी नहीं है।

एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना।
भवान् कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित्॥

ब्रह्माजी! तुम मेरे इस मतके अनुसार सर्वश्रेष्ठ समाधि (सहज समाधि)में भलीभाँति स्थित हो जाओ। फिर तुम कल्प-कल्पान्तरोंमें कभी भी मोहको प्राप्त नहीं होओगे।

(श्रीमद्भागवत २। ९। ३०—३६)
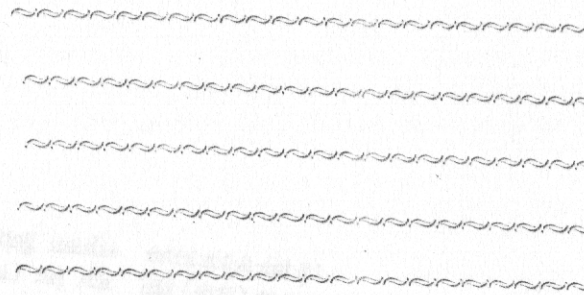
॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

भागवत-धर्म-सार

मनसा वचसा दृष्ट्या गृह्यतेऽन्यैरपीन्द्रियैः।
अहमेव न मत्तोऽन्यदिति बुध्यध्वमञ्जसा॥

श्रीभगवान् बोले–'मनसे, वाणीसे, दृष्टिसे तथा अन्य इन्द्रियोंसे भी जो कुछ (वस्तु, व्यक्ति आदि संसार) ग्रहण किया जाता है अर्थात् अनुभवमें आता है, वह सब मैं ही हूँ। अतः मेरे सिवाय और कुछ भी नहीं है–यह सिद्धान्त आप शीघ्र समझ लें अर्थात् स्वीकार कर लें।'

गुणेषु चाविशच्चित्तमभीक्ष्णं गुणसेवया।
गुणाश्च चित्तप्रभवा मद्रूप उभयं त्यजेत्॥

'बार-बार विषयोंका सेवन करते रहनेसे

चित्त विषयोंमें फँस गया है और विषय चित्तमें बस गये हैं तो उन दोनों (विषय और चित्त) को मेरे स्वरूपमें स्थित होकर त्याग देना चाहिये अर्थात् अपनेमें नहीं मानना चाहिये।'

(श्रीमद्भागवत ११। १३। २४, २६)

मामेव सर्वभूतेषु बहिरन्तरपावृतम्।
ईक्षेतात्मनि चात्मानं यथा खममलाशयः॥

'शुद्ध अन्तःकरणवाला भक्त आकाशकी तरह मुझ आवरणरहित परमात्माको ही देहसहित अपनेमें तथा सम्पूर्ण प्राणियोंके बाहर और भीतर परिपूर्ण देखे।'

इति सर्वाणि भूतानि मद्भावेन महामते।
सभाजयन् मन्यमानो ज्ञानं केवलमाश्रितः॥

'हे महामते उद्धवजी! केवल इस ज्ञानको

धारण करके जो भक्त सम्पूर्ण प्राणियोंमें मेरा ही भाव रखता हुआ अर्थात् उनमें मुझे ही देखता हुआ और उनका आदर करता हुआ—

ब्राह्मणे पुल्कसे स्तेने ब्रह्मण्येऽर्के स्फुलिङ्गके।
अक्रूरे क्रूरके चैव समदृक् पण्डितो मतः॥

ब्राह्मण और चाण्डालमें, ब्राह्मण-भक्त और चोरमें, सूर्य और चिनगारीमें तथा कृपालु और निर्दयमें भी समानदृष्टि रखता है, वह भक्त ज्ञानी माना गया है।'

नरेष्वभीक्ष्णं मद्भावं पुंसो भावयतोऽचिरात्।
स्पर्धाऽसूयातिरस्काराः साहङ्कारा वियन्ति हि॥

'जब भक्तका सम्पूर्ण स्त्री-पुरुषोंमें निरन्तर मेरा ही भाव हो जाता है अर्थात् उनमें मुझे ही देखता है, तब शीघ्र ही उसके चित्तसे

ईर्ष्या, दोषदृष्टि, तिरस्कार आदि दोष अहंकार-सहित सर्वथा दूर हो जाते हैं।'

विसृज्य स्मयमानान् स्वान् दृशं व्रीडां च दैहिकीम्।
प्रणमेद् दण्डवद् भूमावाश्वचाण्डालगोखरम्॥

'हँसी उड़ानेवाले अपने लोगोंको और अपने शरीरकी दृष्टिको भी लेकर जो लज्जा आती है, उसको छोड़कर अर्थात् उसकी परवाह न करके कुत्ते, चाण्डाल, गौ एवं गधेको भी पृथ्वीपर लम्बा गिरकर भगवद्बुद्धिसे साष्टांग प्रणाम करे।'

यावत् सर्वेषु भूतेषु मद्भावो नोपजायते।
तावदेवमुपासीत वाङ्मनःकायवृत्तिभिः॥

'जबतक सम्पूर्ण प्राणियोंमें मेरा भाव अर्थात् 'सब कुछ परमात्मा ही हैं', ऐसा वास्तविक भाव न होने लगे, तबतक इस

प्रकार मन, वाणी और शरीरकी सभी वृत्तियों (बर्ताव) से मेरी उपासना करता रहे।'

सर्वं ब्रह्मात्मकं तस्य विद्ययाऽऽत्ममनीषया।
परिपश्यन्नुपरमेत् सर्वतो मुक्तसंशयः॥

पूर्वोक्त साधन करनेवाले भक्तका 'सब कुछ परमात्मस्वरूप ही है'—ऐसा निश्चय हो जाता है। फिर वह इस अध्यात्मविद्या (ब्रह्मविद्या) द्वारा सब प्रकारसे संशयरहित होकर सब जगह परमात्माको भलीभाँति देखता हुआ उपराम हो जाय अर्थात् 'सब कुछ परमात्मा ही है'—यह चिन्तन भी न रहे, प्रत्युत साक्षात् परमात्मा ही दीखने लगें।

अयं हि सर्वकल्पानां सध्रीचीनो मतो मम।
मद्भावः सर्वभूतेषु मनोवाक्कायवृत्तिभिः॥

'मेरी प्राप्तिके सम्पूर्ण साधनोंमें सबसे श्रेष्ठ साधन मैं यही समझता हूँ कि सम्पूर्ण

प्राणियोंमें मन, वाणी और शरीरकी सभी वृत्तियों (बर्ताव) से मेरी ही भावना की जाय।'

न ह्यङ्गोपक्रमे ध्वंसो मद्धर्मस्योद्धवाण्वपि।
मया व्यवसितः सम्यङ्निर्गुणत्वादनाशिषः॥

'प्यारे उद्धवजी! मेरे इस भागवत-धर्मका निष्कामभावपूर्वक किये गये आरम्भका भी किञ्चिन्मात्र नाश नहीं होता; क्योंकि मैंने ही इस धर्मको तीनों गुणोंसे रहित होनेके कारण सर्वश्रेष्ठ निश्चय किया है।'

यो यो मयि परे धर्मः कल्प्यते निष्फलाय चेत्।
तदायासो निरर्थः स्याद् भयादेरिव सत्तम॥

'हे सर्वश्रेष्ठ उद्धवजी! इस धर्मका पालन करनेवाला जो कोई भक्त यदि भयसे भागने, रोने-पीटने आदिकी तरह निरर्थक कर्म भी निष्कामभावसे मेरे अर्पण कर दे अर्थात्

उस होनहारमें मेरी मरजी मानकर निश्चिन्त हो जाय तो वे निरर्थक कर्म भी परमधर्म हो जाते हैं!'

एषा बुद्धिमतां बुद्धिर्मनीषा च मनीषिणाम्।
यत् सत्यमनृतेनेह मर्त्येनाप्नोति मामृतम्॥

'बुद्धिमानोंकी बुद्धि और चतुरोंकी चतुराई इसीमें है कि वे इस मरणधर्मा और असत्य शरीरसे अर्थात् शरीर और उसकी सम्पूर्ण क्रियाओंको मेरे अर्पण करके मुझ अविनाशी और सत्य परमात्माकी प्राप्ति कर लें।'

(श्रीमद्‌भागवत ११। २९। १२—२२)

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

महाभारत-सार

मातापितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च।
संसारेष्वनुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चापरे॥

'मनुष्य इस जगत्‌में हजारों माता-पिताओं तथा सैकड़ों स्त्री-पुत्रोंके संयोग-वियोगका अनुभव कर चुके हैं, करते हैं और करते रहेंगे।'

हर्षस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च।
दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम्॥

'अज्ञानी मनुष्यको प्रतिदिन हर्षके हजारों और भयके सैकड़ों अवसर प्राप्त होते रहते हैं; किन्तु विद्वान् मनुष्यके मनपर उनका

कोई प्रभाव नहीं पड़ता।'

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छ्णोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते॥

'मैं दोनों हाथ ऊपर उठाकर पुकार-पुकारकर कह रहा हूँ, पर मेरी बात कोई नहीं सुनता! धर्मसे मोक्ष तो सिद्ध होता ही है, अर्थ और काम भी सिद्ध होते हैं तो भी लोग उसका सेवन क्यों नहीं करते!'

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्
धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः।
नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः॥

'कामनासे, भयसे, लोभसे अथवा प्राण बचानेके लिये भी धर्मका त्याग न करे। धर्म नित्य है और सुख-दुःख अनित्य हैं।

इसी प्रकार जीवात्मा नित्य है और उसके बन्धनका हेतु (राग) अनित्य है।'

इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
स भारतफलं प्राप्य परं ब्रह्माधिगच्छति॥

'यह महाभारतका सारभूत उपदेश 'भारत-सावित्री' के नामसे प्रसिद्ध है। जो प्रतिदिन सबेरे उठकर इसका पाठ करता है, वह सम्पूर्ण महाभारतके अध्ययनका फल पाकर परब्रह्म परमात्माको प्राप्त कर लेता है।'

(महाभारत, स्वर्गारोहण॰ ५। ६०—६४)

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

सत्संगके अमृत-कण

(१)

परमात्माके संगसे योग और संसारके संगसे भोग होता है।

(२)

सुखकी इच्छा, आशा और भोग— ये तीनों सम्पूर्ण दुःखोंके कारण हैं।

(३)

सुखकी इच्छाका त्याग करानेके लिये ही दुःख आता है।

(४)

शरीरको 'मैं' और 'मेरा' मानना प्रमाद है; प्रमाद ही मृत्यु है।

(५)

नाशवान्‌को महत्त्व देना ही बन्धन है।

(६)

नाशवान्‌की चाहना छोड़नेसे अविनाशी तत्त्वकी प्राप्ति होती है।

(७)

शरीर-संसारसे अपना सम्बन्ध मानना कुसंग है।

(८)

आप भगवान्‌को नहीं देखते, पर भगवान् आपको निरन्तर देख रहे हैं।

(९)

ऐसा होना चाहिये, ऐसा नहीं होना चाहिये—इसीमें सब दुःख भरे हुए हैं।

(१०)

अपने स्वभावको शुद्ध बनानेके समान कोई उन्नति नहीं है।

(११)

अच्छाईका अभिमान बुराईकी जड़ है।

(१२)

मिटनेवाली चीज एक क्षण भी टिकनेवाली नहीं होती।

(१३)

शरीरको मैं-मेरा माननेसे तरह-तरहके और अनन्त दुःख आते हैं।

(१४)

दूसरोंके दोष देखनेसे न हमारा भला होता है, न दूसरोंका।

(१५)

नाशवान्‌की दासता ही अविनाशीके सम्मुख नहीं होने देती।

(१६)

आप भगवान्‌के दास बन जाओ तो भगवान् आपको मालिक बना देंगे।

(१७)

आराम चाहनेवाला अपनी वास्तविक उन्नति नहीं कर सकता।

(१८)

परमात्मा दूर नहीं हैं, केवल उनको पानेकी लगनकी कमी है।

(१९)

जबतक नाशवान् वस्तुओंमें सत्यता दीखेगी, तबतक बोध नहीं होगा।

(२०)

अपनेमें विशेषता केवल व्यक्तित्वके अभिमानसे दीखती है।

(२१)

भगवान्‌से विमुख होकर संसारके सम्मुख होनेके समान कोई पाप नहीं है।

(२२)

परमात्माकी प्राप्तिमें भावकी प्रधानता है, क्रियाकी नहीं।

(२३)

मनमें किसी वस्तुकी चाह रखना ही दरिद्रता है।

(२४)

स्वार्थ और अभिमानका त्याग करनेसे साधुता आती है।

(२५)

संसारसे विमुख होनेपर बिना प्रयत्न किये स्वतः सद्गुण आते हैं।

(२६)

हमारा सम्मान हो— इस चाहनाने ही हमारा अपमान किया है।

(२७)

हमारा शरीर तो संसारमें है, पर हम स्वयं भगवान्‌में ही हैं।

(२८)

मुक्ति इच्छाके त्यागसे होती है, वस्तुके त्यागसे नहीं।

(२९)

भगवान्‌के लिये अपनी मनचाही छोड़ देना ही शरणागति है।

(३०)

संसारकी सामग्री संसारके कामकी है, अपने कामकी नहीं।

(३१)

संसारसे कुछ भी चाहोगे तो दुःख पाना ही पड़ेगा।

(३२)

वस्तुका सबसे बढ़िया उपयोग है—उसको दूसरेके हितमें लगाना।

(३३)

मनुष्यका उत्थान और पतन भावसे होता है, वस्तु, परिस्थिति आदिसे नहीं।

(३४)

आनेवाला जानेवाला होता है—यह नियम है।

(३५)

हम घरमें रहनेसे नहीं फँसते,

प्रत्युत घरको अपना माननेसे फँसते हैं।

(३६)

'है'-पनको परमात्माका न मानकर संसारका मान लेते हैं—यही गलती है।

(३७)

'करेंगे'—यह निश्चित नहीं है, पर 'मरेंगे'—यह निश्चित है।

(३८)

जबतक अभिमान और स्वार्थ है, तबतक किसीके भी साथ प्रेम नहीं हो सकता।

(३९)

असत्का संग छोड़े बिना सत्संगका प्रत्यक्ष लाभ नहीं होता।

(४०)

भगवान्में अपनापन सबसे सुगम और श्रेष्ठ साधन है।

(४१)

संसारको अपना न मानें तो इसी क्षण मुक्ति है।

(४२)

किसी तरहसे भगवान्में लग

जाओ, फिर भगवान् अपने-आप सँभालेंगे।

(४३)

ठगनेमें दोष है, ठगे जानेमें दोष नहीं है।

(४४)

जिसका स्वभाव सुधर जायगा, उसके लिये दुनिया सुधर जायगी।

(४५)

भगवान्के सिवाय कोई मेरा नहीं है—यह असली भक्ति है।

(४६)

लेकर दान देनेकी अपेक्षा न लेना ही बढ़िया है।

(४७)

भगवान् हठसे नहीं मिलते, प्रत्युत सच्ची लगनसे मिलते हैं।

(४८)

भोगी व्यक्ति रोगी होता है, दुःखी होता है और दुर्गतिमें जाता है।

(४९)

भगवान्‌से विमुख होते ही जीव अनाथ हो जाता है।

(५०)

संसारकी आसक्तिका त्याग किये बिना भगवान्‌में प्रीति नहीं होती।

(५१)

लेनेकी इच्छावाला सदा दरिद्र ही रहता है।

(५२)

ऊँची-से-ऊँची जीवन्मुक्त अवस्था मनुष्यमात्रमें स्वाभाविक है।

(५३)

भगवत्प्राप्तिका सरल उपाय क्रिया नहीं है, प्रत्युत लगन है।

(५४)

साधन स्वयंसे होता है, मन-बुद्धिसे नहीं।

(५५)

यदि जानना ही हो तो अविनाशीको जानो, विनाशीको जाननेसे क्या लाभ?

(५६)

नाशवान्‌की इच्छा ही अन्तः-करणकी अशुद्धि है।

(५७)

शरणागति मन-बुद्धिसे नहीं होती,

प्रत्युत स्वयंसे होती है।

(५८)

मनुष्यको कर्मोंका त्याग नहीं करना है, प्रत्युत कामनाका त्याग करना है।

(५९)

परमात्माके आश्रयसे बढ़कर दूसरा कोई आश्रय नहीं है।

(६०)

प्रारब्ध चिन्ता मिटानेके लिये है, निकम्मा बनानेके लिये नहीं।

(६१)

श्रेष्ठ पुरुष वही है, जो दूसरोंके हितमें लगा हुआ है।

(६२)

चरित्रकी सुन्दरता ही असली सुन्दरता है।

(६३)

रुपयोंको सबसे बढ़िया मानना बुद्धि-भ्रष्ट होनेका लक्षण है।

(६४)

याद करो तो भगवान्‌को याद

करो, काम करो तो सेवा करो।

(६५)

धर्मके लिये धन नहीं चाहिये, मन चाहिये।

(६६)

मनुष्यको वस्तु गुलाम नहीं बनाती, उसकी इच्छा गुलाम बनाती है।

(६७)

शरीरका सदुपयोग केवल संसारकी सेवामें ही है।

(६८)

भगवान् सर्वसमर्थ होते हुए भी हमारेसे दूर होनेमें असमर्थ हैं।

(६९)

यदि शान्ति चाहते हो तो कामनाका त्याग करो।

(७०)

कुछ भी लेनेकी इच्छा भयंकर दुःख देनेवाली है।

(७१)

पारमार्थिक उन्नति करनेवालेकी लौकिक उन्नति स्वतः होती है।

(७२)

संसार विश्वास करनेयोग्य नहीं है, प्रत्युत सेवा करनेयोग्य है।

(७३)

सच्ची बातको स्वीकार करना मनुष्यका धर्म है।

(७४)

ज्ञान मुक्त करता है, पर ज्ञानका अभिमान नरकोंमें ले जाता है।

(७५)

प्रतिक्षण बदलनेवाले संसारपर विश्वास ही भगवान्पर विश्वास नहीं

होने देता।

(७६)

भोगी योगी नहीं होता, प्रत्युत रोगी होता है।

(७७)

सबमें भगवद्‌भाव करनेसे सम्पूर्ण विकारोंका नाश हो जाता है।

(७८)

भक्त दुर्लभ है, भगवान् नहीं।

(७९)

विचार करो, क्या ये दिन सदा ऐसे ही रहेंगे?

(८०)

भगवान् हमारे हैं, पर मिली हुई वस्तु हमारी नहीं है, प्रत्युत भगवान्‌की है।

(८१)

एक-एक व्यक्ति खुद सुधर जाय तो समाज सुधर जायगा।

(८२)

अब मैं पुनः पाप नहीं करूँगा—यह पापका असली प्रायश्चित्त है।

(८३)

नाशवान्‌में अपनापन अशान्ति

और बन्धन देनेवाला है।

(८४)

अगर अपनी सन्तानसे सुख चाहते हो तो अपने माता-पिताकी सेवा करो।

(८५)

मुझे सुख मिल जाय—यह सब पापोंकी जड़ है।

(८६)

जहाँ लौकिक सुख मिलता हुआ दीखे, वहाँ समझ लो कि कोई खतरा है!

(८७)

अपना जीवन अपने लिये नहीं है, प्रत्युत दूसरोंके हितके लिये है।

(८८)

भगवन्नामका जप और कीर्तन—दोनों कलि-युगसे रक्षा करके उद्धार करनेवाले हैं।

(८९)

जबतक संसारमें आसक्ति है, तबतक भगवान्‌में असली प्रेम नहीं है।

(९०)

दूसरेके दुःखसे दुःखी होना सेवाका मूल है।

(९१)

किसीके अहितकी भावना करना अपने अहितको निमन्त्रण देना है।

(९२)

वस्तु-व्यक्तिसे सुख लेना महान् जडता है।

(९३)

जिसके भीतर इच्छा है, उसको किसी-न-किसीके पराधीन होना ही पड़ेगा।

(९४)

जो दूसरेको दुःख देता है, उसका भजनमें मन नहीं लगता।

(९५)

जो हमसे कुछ भी चाहता है, वह हमारा गुरु कैसे हो सकता है?

(९६)

सन्तोषसे काम, क्रोध और लोभ—तीनों नष्ट हो जाते हैं।

(९७)

अपने लिये सुख चाहना आसुरी, राक्षसी वृत्ति है।

(९८)

मिले हुएको अपना मत मानो तो मुक्ति स्वत:सिद्ध है।

(९९)

अपने सुखसे सुखी होनेवाला कोई भी मनुष्य योगी नहीं होता।

(१००)

याद रखो, भगवान्‌का प्रत्येक विधान आपके परम हितके लिये है।

श्रीमद्भगवद्गीताजीकी आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्तिहरा।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल, मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा॥ जय०
आसुर-भाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्‌गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी॥ जय०
समता-त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै॥ जय०

श्रीरामायणजीकी आरती

आरति श्रीरामायनजी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।
बालमीक बिग्यान बिसारद॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद।
बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥१॥
गावत बेद पुरान अष्टदस।
छओ सास्त्र सब ग्रन्थन को रस॥
मुनि जन धन संतन को सरबस।
सार अंस संमत सबही की॥२॥
गावत संतत संभु भवानी।
अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी॥
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी।
कागभुसुंडि गरुड के ही की॥३॥
कलिमल हरनि बिषय रस फीकी।
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की॥
दलन रोग भव मूरि अमी की।
तात मात सब बिधि तुलसी की॥४॥

श्रीमद्भागवतजीकी आरती

आरति अति पावन पुरानकी।
धर्म-भक्ति-विज्ञान-खानकी ॥
महापुरान भागवत निरमल।
शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल।
परमानन्द-सुधा-रसमय कल।
लीला-रति-रस रसनिधानकी॥ आ०॥
कलि-मल-मथनि त्रिताप-निवारिनि।
जन्म-मृत्युमय भव-भय-हारिनि।
सेवत सतत सकल सुखकारिनि।
सुमहौषधि हरि-चरित-गानकी॥ आ०॥
विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि।
विमल विराग विवेक विकाशिनि।
भगवत्तत्त्व-रहस्य प्रकाशिनि।
परम ज्योति परमात्म-ज्ञानकी॥ आ०॥
परम हंस-मुनि-मन उल्लासिनि।
रसिक-हृदय रस-रास विलासिनि।
भुक्ति, मुक्ति, रति-प्रेम सुदासिनि।
कथा अकिञ्चनप्रिय सुजानकी॥ आ०॥

॥ श्रीहरिः ॥

पंचामृत

१. हम भगवान्‌के ही हैं।

२. हम जहाँ भी रहते हैं, भगवान्‌के ही दरबारमें रहते हैं।

३. हम जो भी शुभ काम करते हैं, भगवान्‌का ही काम करते हैं।

४. शुद्ध-सात्त्विक जो भी पाते हैं, भगवान्‌का ही प्रसाद पाते हैं।

५. भगवान्‌के दिये प्रसादसे भगवान्‌के ही जनोंकी सेवा करते हैं।

॥ श्रीहरिः ॥

सं. २०६५ प्रथम संस्करण : २०,०००

SKP # 0117

मूल्य : तीन रुपये

यह विधि-निषेध उनके लिये आवश्यक है, जो अपना कल्याण चाहते हैं। विदेशी लोगोंमें ऐसा विधि-निषेध नहीं देखा जाता; क्योंकि वे अपने कल्याणके उद्देश्यसे कार्य करते ही नहीं। विदेशी लोग इन बातोंको 'मानते' नहीं — यह बात नहीं है, वे तो इन बातोंको 'जानते' ही नहीं। ये बातें ऋषियों-मुनियोंकी खोज हैं, जिनका प्रभाव अवश्य होता है।

— परमश्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक सन्तकी अमूल्य शिक्षा

१. एक ही सिद्धान्त, एक ही इष्ट, एक ही मन्त्र, एक ही माला, एक ही समय, एक ही आसन, एक ही स्थान हो तो जल्दी सिद्धि होती है।

२. विष्णु, शंकर, गणेश, सूर्य और देवी — ये पाँचों एक ही हैं। विष्णुकी बुद्धि 'गणेश' है, अहम् 'शंकर' है, नेत्र 'सूर्य' है और शक्ति 'देवी' है। राम और कृष्ण विष्णुके अन्तर्गत ही हैं।

३. कलियुगमें कोई अपना उद्धार करना चाहे तो राम तथा कृष्णकी प्रधानता है, और सिद्धियाँ प्राप्त करना चाहे तो शक्ति तथा गणेशकी प्रधानता है— **'कलौ चण्डीविनायकौ'**।

४. औषधसे लाभ न हो तो भगवान्‌को पुकारना चाहिये। एकान्तमें बैठकर कातर भावसे, रोकर

भगवान्से प्रार्थना करें तो जो काम औषधसे नहीं होता, वह प्रार्थनासे हो जाता है। मन्त्रोंमें, अनुष्ठानोंमें उतनी शक्ति नहीं है, जितनी शक्ति प्रार्थनामें है। प्रार्थना जपसे भी तेज है।

५. भक्तोंके नामसे भगवान् राजी होते है। शंकरके मन्दिरमें घण्टाकर्ण आदिका, रामके मन्दिरमें हनुमान्, शबरी आदिका नाम लो। शंकरके मन्दिरमें रामायणका पाठ करो। रामके मन्दिरमें शिवताण्डव, शिवमहिम्नः आदिका पाठ करो। वे राजी हो जायँगे। हनुमान्जीको प्रसन्न करना हो उन्हें रामायण सुनाओ। रामायण सुननेसे वे बड़े राजी होते हैं।

६. अपने कल्याणकी इच्छा हो तो 'पंचमुखी या वीर हनुमान्'की उपासना न करके 'दास हनुमान्'की उपासना करनी चाहिये।

७. शिवजीका मन्त्र रुद्राक्षकी मालासे जपना चाहिये, तुलसीकी मालासे नहीं।

८. हनुमान्जी और गणेशजीको तुलसी नहीं चढ़ानी चाहिये।

९. गणेशजी बालकरूपमें हैं। उन्हें लड्डू और लाल वस्त्र अच्छे लगते हैं।

१०. दशमी-विद्धा एकादशी त्याज्य होती है, पर गणेशचतुर्थी तृतीया-विद्धा श्रेष्ठ होती है।

११. किसी कार्यको करें या न करें - इस विषयमें निर्णय करना हो तो एक दिन अपने इष्टका खूब भजन-ध्यान, नामजप, कीर्तन करें। फिर कागजकी दो पुड़िया बनायें। एकमें लिखें 'काम करें' और दूसरीमें लिखें 'काम न करें। फिर किसी बच्चेसे कोई एक पुड़िया उठवायें और उसे खोलकर पढ़ लें।

१२. किंकर्तव्यविमूढ़ होनेकी दशामें चुप, शान्त हो जायँ और भगवान्को याद करें तो समाधान मिल जायगा।

१३. कोई काम करना हो तो मनसे भगवान्को देखो। भगवान् प्रसन्न दीखें तो वह काम करो और प्रसन्न न

दीखें तो वह काम मत करो कि भगवान्‌की आज्ञा नहीं है। एक-दो दिन करोगे तो भान होने लगेगा।

१४. विदेशी लोग दवापर जोर देते हैं, पर हम पथ्यपर जोर देते हैं-

पथ्ये सति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः॥

(वैद्यजीवनम् १/१०)

'पथ्यसे रहनेपर रोगी व्यक्तिको औषध-सेवनसे क्या प्रयोजन ? और पथ्यसे न रहनेपर रोगी व्यक्तिको औषध-सेवनसे या प्रयोजन ?'

१५. जहाँतक हो सके, किसी भी रोगमें ऑपरेशन नहीं कराना चाहिये। दवाओंसे चिकित्सा करनी चाहिये। ऑपरेशनद्वारा प्रसव कभी न करायें। जो स्त्री चक्की चलाती है, उसे प्रसवके समय पीड़ा नहीं होती और स्वास्थ्य भी सदा ठीक रहता है।

१६. एक ही दवा लम्बे समयतक नहीं लेनी चाहिये। बीचमें कुछ दिन उसे छोड देना चाहिये। निरन्तर लेनेसे वह दवा आहार (भोजन)की तरह हो जाती है।

१७. वास्तवमें प्रारब्धसे रोग बहुत कम होते हैं, ज्यादा रोग कुपथ्यसे अथवा असंयमसे होते हैं। कुपथ्य छोड दें तो रोग बहुत कम हो जायँगे। ऐसे ही प्रारब्धसे दुःख बहुत कम होता है, ज्यादा दुःख मूर्खतासे, राग-द्वेषसे, खराब स्वभावसे होता है।

१८. चिन्तासे कई रोग होते हैं। कोई रोग हो तो वह चिन्तासे बढता है। चिन्ता न करनेसे रोग जल्दी ठीक होता है। हरदम प्रसन्न रहनेसे प्रायः रोग नहीं होता, यदि होता भी है तो उसका असर कम पडता है।

१९. मन्दिरके भीतर स्थित प्राण-प्रतिष्ठित मूर्तिके दर्शनका जो माहात्म्य है, वही माहात्म्य मन्दिरके शिखरके दर्शनका है।

२०. शिवलिंगपर चढ़ा पदार्थ ही निर्माल्य अर्थात् त्याज्य है। जो पदार्थ शिवलिंगपर नहीं चढ़ा, वह निर्माल्य नहीं है। द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें शिवलिंगपर चढ़ा पदार्थ भी निर्माल्य नहीं है।

२१. जिस मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा हुई हो, उसीमें सूतक लगता है। अतः उसकी पूजा ब्राह्मण अथवा बहन-बेटीसे करानी चाहिये। परन्तु जिस मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा नहीं की गयी हो, उसमें सूतक नहीं लगता। कारण कि प्राणप्रतिष्ठाके बिना ठाकुरजी घरके सदस्यकी तरह ही हैं; अतः उनका पूजन सूतकमें भी किया जा सकता है।

२२. घरमें जो मूर्ति हो, उसका चित्र लेकर अपने पास रखें। कभी बाहर जाना पड़े तो उस चित्रकी पूजा करें। किसी कारणवश मूर्ति खण्डित हो जाय तो उस अवस्थामें भी उस चित्रकी ही पूजा करें।

२३. घरमें रखी ठाकुरजीकी मूर्तिमें प्राण-प्रतिष्ठा नहीं करानी चाहिये।

२४. किसी स्तोत्रका माहात्म्य प्रत्येक बार पढ़नेकी जरूरत नहीं। आरम्भ और अन्तमें एक बार पढ़ लेना चाहिये।

२५. जहाँ तक शंख और घण्टेकी आवाज जाती है, वहाँतक नीरोगता, शान्ति, धार्मिक भाव फैलते हैं।

२६. कभी मनमें अशान्ति, हलचल हो तो पन्द्रह-बीस मिनट बैठकर राम-नामका जप करो अथवा '**आगमापायिनोऽनित्याः**' (गीता २/१४) — इसका जप करो, हलचल मिट जायगी।

२७. कोई आफत आ जाय तो दस-पन्द्रह मिनट बैठकर नामजप करो और प्रार्थना करो तो रक्षा हो जायगी। सच्चे हृदयसे की गयी प्रार्थनासे तत्काल लाभ होता है।

२८. घरमें बच्चोंसे प्रतिदिन घण्टा-डेढ़ घण्टा भगवन्नामका कीर्तन करवाओ तो उनकी जरूर सद्बुद्धि होगी और दुर्बुद्धि दूर होगी।

२९. '**गोविन्द गोपालकी जय**' -इस मन्त्रका उच्चारण करनेसे संकल्प-विकल्प मिट जाते हैं।, आफत मिट जाती है।

३०. नामजपसे बहुत रक्षा होती है। गोरखपुरमें प्रति बारह वर्ष प्लेग आया करता था। भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारने एक वर्षतक नामजप कराया तो फिर प्लेग नहीं आया।

३१. कोई रात-दिन राम-राम करना शुरू कर दे तो उसके पास अन्न, जल, वस्त्र आदिकी कमी नहीं रहेगी।

३२. प्रह्लादकी तरह एक नामजपमें लग जाय तो कोई जादू-टोना, व्यभिचार, मूठ आदि काम नहीं करता।

३३. वास्तवमें वशीकरण मन्त्र उसीपर चलता है, जिसके भीतर कामना है। जितनी कामना होगी, उतना असर होगा। अगर कोई कामना न हो तो मन्त्र नहीं चल सकता; जैसे पत्थरपर जोंक नहीं लग सकती।

३४. रामरक्षास्तोत्र, हनुमान्चालीसा, सुन्दरकाण्डका पाठ करनेसे अनिष्ट मन्त्रोंका (मारण-मोहन आदि तांत्रिक प्रयोगोंका) असर नहीं होता। परन्तु इसमें बलाबल काम करेगा।

३५. भगवन्नामका जप-कीर्तन करनेसे अथवा कर्कोटक, दमयन्ती, नल और ऋतुपर्णका नाम लेनेसे कलियुग असर नहीं करता—

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च ।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ।।

(महाभारत, वन. ७९/१०)

३६. कलियुगसे बचनेके लिये हरेक भाई-बहनको नल-दमयन्तीकी कथा पढ़नी चाहिये। नल-दमयन्तीकी कथा पढ़नेसे कलियुगका असर नहीं होगा, बुद्धि शुद्ध होगी।

३७. छोटे गरीब बच्चोंको मिठाई, खिलौना आदि देकर राजी करनेसे बहुत लाभ होता है और शोक-चिन्ता मिटते हैं, दुःख दूर होता है। इसमें इतनी शक्ति है कि आपका भाग्य बदल सकता है। जिनका हृदय कठोर हो, वे यदि छोटे-छोटे गरीब बच्चोंको मिठाई खिलायें और उन्हें खाते हुए देखें तो उनका हृदय इतना नरम हो जायगा कि एक दिन वे रो पड़ेंगे!

३८. छोटे ब्राह्मण-बालकोंको मिठाई, खिलौना आदि मनपसन्द वस्तुएँ देनेसे पितृदोष मिट जाता है।

३९. कन्याओंको भोजन करानेसे शक्ति बहुत प्रसन्न होती है।

४०. रात्रि सोनेसे पहले अपनी छायाको तीन बार कह दे कि मुझे प्रातः इतने बजे उठा देना तो ठीक उतने बजे नींद खुल जायगी। पर उस समय जरूर उठ जाना चाहिये।

४१. जो साधक रात्रि साढे ग्यारहसे साढे बारह बजेतक अथवा ग्यारहसे एक बजेतक जगकर भजन-स्मरण, नाम-जप करता है, उसको अन्त समयमें मूर्च्छा नहीं आती और भगवान्‌की स्मृति बनी रहती है।

४२. सूर्योदय और सूर्यास्तके समय सोना नहीं चाहिये। सूर्योदयके बाद उठनेसे बुद्धि कमजोर होती है, और सूर्योदयसे पहले उठनेसे बुद्धिका विकास होता है। अतः सूर्योदय होनेसे पहले ही उठ जाओ और सूर्यको नमस्कार करो। फिर पीछे भले ही सो जाओ।

४३. प्रतिदिन स्नान करते समय 'गंगे-गंगे' उच्चारण करनेकी आदत बना लेनी चाहिये। गंगाके इन नामोंका भी स्नान करते समय उच्चारण करना चाहिये— **'ब्रह्मकमण्डुली, विष्णुपादोदकी, जटाशंकरी, भागीरथी, जाह्नवी'**। इससे ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश —तीनोंका स्मरण हो जाता है।

४४. प्रतिदिन प्रातः स्नानके बाद गंगाजलका आचमन लेना चाहिये। गंगाजल लेनेवाला नरकोंमें नहीं जा सकता। गंगाजलको आगपर गरम नहीं करना चाहिये। यदि गरम करना ही हो तो धूपमें रखकर गरम कर सकते हैं। सूतकमें भी गंगा-स्नान कर सकते हैं।

४५. सूर्यको जल देनेसे त्रिलोकीको जल देनेका माहात्म्य होता है। प्रातः स्नानके बाद एक ताँबेके लोटेमें जल लेकर उसमें लाल पुष्प या कुंकुम डाल दे

और **'श्रीसूर्याय नमः'** अथवा **'एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।'** कहते हुए तीन बार सूर्यको जल दे।

४६. प्रत्येक बार लघुशंका करनेके बाद इन्द्रिय और मुखको ठण्डे जलसे तथा पैरोंको गरम जलसे धोना चाहिये। इससे आयु बढ़ती है।

४७. प्रत्येक कार्यमें यह सावधानी रखनी चाहिये कि समय और वस्तु कम-से-कम खर्च हों।

४८. रोज प्रातः बड़ोंको नमस्कार करना चाहिये। जो प्रातः बड़ोंको नमस्कार करते हैं, वे नमस्कार करनेयोग्य हैं।

४९. कोई हमारा चरण-स्पर्श करे तो आशीर्वाद न देकर भगवन्नामका उच्चारण करना चाहिये।

५०. किसीसे विरोध हो तो मनसे उसकी परिक्रमा करके प्रणाम करो तो उसका विरोध मिटता है, द्वेष-वृत्ति मिटती है। इससे हमारा वैर भी मिटेगा। हमारा वैर मिटनेसे उसका भी वैर मिटेगा।

५१. कोई व्यक्ति हमसे नाराज हो, हमारे प्रति अच्छा भाव न रखता हो तो प्रतिदिन सुबह-शाम मनसे उसकी परिक्रमा करके दण्डवत् प्रणाम करें। ऐसा करनेसे कुछ ही दिनोंमें उसका भाव बदल जायगा। फिर वह व्यक्ति कभी मिलेगा तो उसके भावोंमें अन्तर दीखेगा। भजन-ध्यान करनेवाले साधकके मानसिक प्रणामका दूसरेपर ज्यादा असर पड़ता है।

५२. किसी व्यक्तिका स्वभाव खराब हो तो जब वह गहरी नींदमें सोया हो, तब उसके श्वासोंके सामने अपना मुख करके धीरेसे कहें कि 'तुम्हारा स्वभाव बड़ा अच्छा है, तुम्हारेमें क्रोध नहीं है' आदि। कुछ दिन ऐसा करनेसे उसका स्वभाव सुधरने लगेगा।

५३. अगर बेटेका स्वभाव ठीक नहीं हो तो उसे अपना बेटा न मानकर, उसमें सर्वथा अपनी ममता छोड़कर उसे सच्चे हृदयसे भगवान्‌केअर्पण कर दे, उसे भगवान्‌का ही मान ले तो उसका स्वभाव सुधर जायगा।

५४. गायकी सेवा करनेसे सब कामनाएँ सिद्ध होती हैं। गायको सहलानेसे, उसकी पीठ आदिपर हाथ फेरनेसे गाय प्रसन्न होती है। गायके प्रसन्न होनेपर साधारण रोगोंकी तो बात ही क्या है, बड़े-बड़े असाध्य रोग भी मिट जाते हैं। लगभग बारह महीनेतक करके देखना चाहिये।

५५. गायके दूध, घी, गोबर-गोमूत्र आदिमें जीवनी-शक्ति रहती है। गायके घीके दीपकसे शान्ति मिलती है। गायका घी लेनेसे विषैली तथा नशीली वस्तुका असर नष्ट हो जाता है। परन्तु बुद्धि अशुद्ध होनेसे अच्छी चीज भी बुरी लगती है, गायके घीसे भी दुर्गन्ध आती है!

५६. बूढ़ी गायका मूत्र तेज होता है और आँतोंमें घाव कर देता है। परन्तु दूध पीनेवाली बछड़ीका मूत्र सौम्य होता है; अतः वही लेना चाहिये।

५७. गायोंका संकरीकरण नहीं करना चाहिये। यह सिद्धान्त है कि शुद्ध चीजमें अशुद्ध चीज मिलनेसे अशुद्धकी ही प्रधानता हो जायगी; जैसे– छाने हुए जलमें अनछाने जलकी कुछ बूँदें डालनेसे सब जल अनछाना हो जायगा।

५८. कहीं जाते समय रास्तेमें गाय आ जाय तो उसे अपनी दाहिनी तरफ करके निकलना चाहिये। दाहिनी तरफ करनेसे उसकी परिक्रमा हो जाती है।

५९. रोगी व्यक्तिको भगवान्का स्मरण कराना सबसे बड़ी और सच्ची सेवा है। अधिक बीमार व्यक्तिको सांसारिक लाभ-हानिकी बातें नहीं सुनानी चाहिये। छोटे बच्चोंको उसके पास नहीं ले जाना चाहिये; क्योंकि बच्चोंमें स्नेह अधिक होनेसे उसकी वृत्ति उनमें चली जायगी।

६०. रोगी व्यक्ति कुछ भी खा-पी न सके तो गेहूँ आदिको अग्निमें डालकर उसका धुआँ देना चाहिये।

उस धुएँसे रोगीको पुष्टि मिलती है।

६१. भगवन्नाम अशुद्ध अवस्थामें भी लेना चाहिये। कारण कि बीमारीमें प्रायः अशुद्धि रहती है। यदि नाम लिये बिना मर गये तो क्या दशा होगी? क्या अशुद्ध अवस्थामें श्वास नहीं लेते? नामजप तो श्वाससे भी अधिक मूल्यवान् है।

६२. मरणासन्न व्यक्तिके सिरहाने गीताजी रखे। दाह-संस्कारके समय उस गीताजीको गंगाजीमें बहा दे, जलाये नहीं।

६३. यदि रोगीके मस्तकपर लगाया चन्दन जल्दी सूख जाय तो समझे कि ये जल्दी मरनेवाला नहीं है। मृत्युके समीप पहुँचे व्यक्तिके मस्तकपर लगा चन्दन जल्दी नहीं सूखता; क्योंकि उसके मस्तककी गरमी चली जाती है, मस्तक ठण्डा हो जाता है।

६४. शवके दाह-संस्कारके समय मृतकके गलेमें पड़ी तुलसीकी माला न निकाले, पर गीताजी हो तो

निकाल देनी चाहिये।

६५. अस्पतालमें मरनेवालेकी प्रायः सद्गति नहीं होती। अतः मरणासन्न व्यक्ति यदि अस्पतालमें हो तो उसे घर ले आना चाहिये।

६६. श्राद्ध आदि कर्म भारतीय तिथिके अनुसार करने चाहिये, अँग्रेजी तारीखके अनुसार नहीं। (भारत आजाद हो गया, पर भीतरसे गुलामी नहीं गयी! लोग अँगेजी दिनांक तो जानते हैं, पर तिथि जानते ही नहीं!)

६७. किसी व्यक्तिकी विदेशमें मृत्यु हो जाय तो उसके श्राद्ध आदिमें वहाँकी तिथि न लेकर भारतकी तिथि ही लेनी चाहिये अर्थात् उसकी मृत्युके समय भारतमें जो तिथि हो, उसी तिथिमें श्राद्धादि करना चाहिये।

६८. श्राद्धका अन्न साधुको नहीं देना चाहिये, केवल ब्राह्मणको ही देना चाहिये।

६९. घरमें किसीकी मृत्यु होनेपर सत्संग, मन्दिर और तीर्थ –इन तीनोंमें शोक नहीं रखना चाहिये अर्थात् इन तीनों जगह जरूर जाना चाहिये। इनमें भी सत्संग विशेष है। सत्संगसे शोकका नाश होता है।

७०. किसीकी मृत्युसे दुःख होता है तो इसके दो कारण हैं– उससे सुख लिया है, और उससे आशा रखी है। मृतात्माकी शान्ति और अपना शोक दूर करनेके लिये तीन उपाय करने चाहिये– १) मृतात्माको भगवान्‌के चरणोंमें बैठा देखें २) उसके निमित्त गीता, रामायण, भागवत, विष्णुसहस्रनाम आदिका पाठ करवायें ३) गरीब बालकोंको मिठाई बाँटें।

७१. घरका कोई मृत व्यक्ति बार-बार स्वप्नमें आये तो उसके निमित्त गीता-रामायणका पाठ करें, गरीब बालकोंको मिठाई खिलायें। किसी अच्छे ब्राह्मणसे गया-श्राद्ध करवायें। उसी मृतात्माकी अधिक याद

आती है, जिसका हमपर ऋण है। उससे जितना सुख-आराम लिया है, उससे अधिक सुख-आराम उसे न दिया जाय, तबतक उसका ऋण रहता है। जबतक ऋण रहेगा, तबतक उसकी याद आती रहेगी।

७२. यह नियम है कि दुःखी व्यक्ति ही दूसरेको दुःख देता है। यदि कोई प्रेतात्मा दुःख दे रही है तो समझना चाहिये कि वह बहुत दुःखी है। अतः उसके हितके लिये गया-श्राद्ध करा देना चाहिये।

७३. कन्याएँ प्रतिदिन सुबह-शाम सात-सात बार 'सीता माता' और 'कुन्ती माता' नामोंका उच्चारण करें तो वे पतिव्रता होती हैं।

७४. विवाहसे पहले लड़के-लड़कीका मिलना व्यभिचार है। इसे मैं बड़ा पाप मानता हूँ।

७५. माताएँ-बहनें अशुद्ध अवस्थामें भी रामनाम लिख सकती हैं, पर पाठ बिना पुस्तकके करना

चाहिये। यदि आवश्यक हो तो उन दिनोंके लिये अलग पुस्तक रखनी चाहिये। अशुद्ध अवस्थामें हनुमान्चालीसाका स्वयं पाठ न करके पतिसे पाठ कराना चाहिये।

७६. अशुद्ध अवस्थामें माताएँ तुलसीकी मालासे जप न करके काठकी मालासे जप करें, और गंगाजीमें स्नान न करके गंगाजल मँगाकर स्नानघरमें स्नान करें। तुलसीकी कण्ठीतो हर समय गलेमें रखनी चाहिये।

७७. गर्भपात महापाप है। इससे बढ़कर कोई पाप नहीं है। गर्भपात करनेवालेकी अगले जन्ममें कोई सन्तान नहीं होती।

७८. स्त्रियोंको शिवलिंग, शालग्राम और हनुमान्जीका स्पर्श कदापि नहीं करना चाहिये। उनकी पूजा भी नहीं करनी चाहिये। वे शिवलिंगकी पूजा न करके शिवमूर्तिकी पूजा कर सकती हैं। हाँ,

जहाँ प्रेमभाव मुख्य होता है, वहाँ विधि-निषेध गौण हो जाता है।

७९. स्त्रियोंको रुद्राक्षकी माला धारण नहीं करनी चाहिये। वे तुलसीकी माला धारण करें।

८०. भगवान्की जय बोलने अथवा किसी बातका समर्थन करनेके समय केवल पुरुषोंको ही अपने हाथ ऊँचे करने चाहिये, स्त्रियोंको नहीं।

८१. स्त्रीको गायत्री-जप और जनेऊ-धारण करनेका अधिकार नहीं है। जनेऊके बिना ब्राह्मण भी गायत्री-जप नहीं कर सकता। शरीर मल-मूत्र पैदा करनेकी मशीन है। उसकी महत्ताको लेकर स्त्रियोंको गायत्री-जपका अधिकार देते हैं तो यह अधिकार नहीं, प्रत्युत धिक्कार है! यह कल्याणका रास्ता नहीं है, प्रत्युत केवल अभिमान बढ़ानेके लिये है। कल्याण चाहनेवाली स्त्री गायत्री-जप नहीं करेगी। स्त्रीके लिये गायत्री-मन्त्रका निषेध करके उसका तिरस्कार नहीं

किया है, प्रत्युत उसको आफतसे छुड़ाया है! गायत्री-जपसे ही कल्याण होता हो — यह बात नहीं है। राम-नामका जप गायत्रीसे कम नहीं है। (सबको समान अधिकार प्राप्त हो जाय, सब बराबर हो जायँ — ऐसी बातें कहने-सुननेमें तो बड़ी अच्छी दीखती हैं, पर आचरणमें लाकर देखो तो पता लगे! सब गड़बड़ हो जायगा! मेरी बातें आचरणमें ठीक होती हैं।)

८२. पतिके साधु होनेपर पत्नी विधवा नहीं होती। अतः उसे सुहागके चिह्न नहीं छोड़ने चाहिये।

८३. स्त्री परपुरुषका और पुरुष परस्त्रीका स्पर्श न करे तो उनका तेज बढ़ेगा। पुरुष माँके चरणोंमें मस्तक रखकर प्रणाम करे, पर अन्य सब स्त्रियोंको दूरसे प्रणाम करे। स्त्री पतिके चरण-स्पर्श करे, पर ससुर आदि अन्य पुरुषोंको दूरसे प्रणाम करे। तात्पर्य है कि स्त्रीको पतिके सिवाय किसीके भी चरण नहीं

छूने चाहिये। साधु-सन्तोंको भी दूरसे पृथ्वीपर सिर टेककर प्रणाम करना चाहिये।

८४. दूध पिलानेवाली स्त्रीको पतिका संग नहीं करना चाहिये। ऐसा करनेसे दूध दूषित हो जाता है, जिसे पीनेसे बच्चा बीमार हो जाता है।

८५. कुत्ता अपनी तरफ भौंकता हो तो दोनों हाथोंकी मुट्ठी बन्द कर लें। कुछ देरमें वह चुप हो जायगा।

८६. मुसलमानलोग पेशाबको बहुत ज्यादा अशुद्ध मानते हैं। अतः गोमूत्र पीने अथवा छिड़कनेसे मुस्लिम तन्त्रका प्रभाव कट जाता है।

८७. कहीं स्वर्ण पड़ा हुआ मिल जाय तो उसे कभी उठाना नहीं चाहिये।

८८. पान भी एक शृंगार है। यह निषिद्ध वस्तु नहीं है, पर ब्रह्मचारी, विधवा और संन्यासीके लिये इसका निषेध है।

८९. पुरुषकी बायीं आँख ऊपरसे फड़के तो शुभ होती है, नीचेसे फड़के तो अशुभ होती है। कानकी तरफवाला आँखका कोना फड़के तो अशुभ होता है और नाककी तरफवाला आँखका कोना फड़के तो शुभ होता है।

९०. यदि ज्वर हो तो छींक नहीं आती। छींक आ जाय तो समझो ज्वर गया! छींक आना बीमारीके जानेका शुभ शकुन है।

९१. शकुन मंगल अथवा अमंगल-'कारक' नहीं होते, प्रत्युत मंगल अथवा अमंगल-'सूचक' होते हैं।

९२. 'पूर्व'की वायुसे रोग बढ़ जाता है। सर्प आदिका विष भी पूर्वकी वायुसे बढ़ता है। 'पश्चिम'की वायु नीरोग करनेवाली होती है।'पश्चिम' वरुणका स्थान होनेसे वारुणीका स्थान भी है। विद्युत् तरंगें, ज्ञानका प्रवाह 'उत्तर'से आता है। 'दक्षिण'में नरकोंका स्थान है। 'आग्नेय'की वायुसे गीली जमीन जल्दी सूख

जाती है; क्योंकि आग्नेयकी वायु शुष्क होती है। शुष्क वायु नीरोगता लाती है। 'नैर्ऋत्य' राक्षसोंका स्थान है। 'ईशान' कालरहित एवं शंकरका स्थान है। शंकरका अर्थ है— कल्याण करनेवाला।

९३. बच्चोंको तथा बड़ोंको भी नजर लग जाती है। नजर किसी-किसीकी ही लगती है, सबकी नहीं। कइयोंकी दृष्टिमें जन्मजात दोष होता है और कई जान-बूझकर भी नजर लगा देते हैं। नजर उतारनेके ये उपाय हैं- *पहला*, साबत लालमिर्च और नमक व्यक्तिके सिरपर घुमाकर अग्निमें जला दें। नजर लगी होगी तो गन्ध नहीं आयेगी। *दूसरा*, दाहिने हाथकी मध्यमा-अनामिका अंगुलियोंको हथेलीकी तरफ मोड़कर तर्जनी व कनिष्ठा अंगुलियोंको परस्पर मिला लें और बालकके सिरसे पैरतक झाड़ा दें। ये दो अंगुलियाँ सबकी नहीं मिलतीं। *तीसरा*, जिसकी नजर लगी हो, वह उस बालकको थू-थू-थू

कर दे, तो भी नजर उतर जाती है।

९४. नया मकान बनाते समय जीवहिंसा होती है; विभिन्न जीव-जन्तुओंकी स्वतन्त्रतामें, उनके आवागमनमें तथा रहनेमें बाधा लगती है, जो बड़ा पाप है। अतः नये मकानकी प्रतिष्ठाका भोजन नहीं करना चाहिये, अन्यथा दोष लगता है।

९५. जहाँतक हो सके, अपना पहना हुआ वस्त्र दूसरेको नहीं देना चाहिये।

९६. देवीकी उपासना करनेवाले पुरुषको कभी स्त्रीपर क्रोध नहीं करना चाहिये।

९७. एक-दूसरेकी विपरीत दिशामें लिखे गये वाक्य अशुभ होते हैं। इन्हें 'जुंझारू वाक्य' कहते हैं।

९८. कमीज, कुरते आदिमें बायाँ भाग (बटन लगानेका फीता आदि) ऊपर नहीं आना चाहिये। हिन्दू-संस्कृतिके अनुसार वस्त्रका दायाँ भाग ऊपर आना चाहिये।

९९. मंगल भूमिका पुत्र है; अतः मंगलवारको भूमि नहीं खोदनी चाहिये, अन्यथा अनिष्ट होता है। मंगलवारको वस्त्र नापना, सिलना तथा पहनना भी नहीं चाहिये।

१००. नीयतमें गड़बड़ी होनेसे, कामना होनेसे और विधिमें त्रुटि होनेसे मन्त्रोपासकको हानि भी हो सकती है। निष्काम भाव रखनेवालेको कभी कोई हानि नहीं हो सकती।

१०१. हनुमान्चालीसाका पाठ करनेसे प्रेतात्मापर हनुमान्जीकी मार पड़ती है।

१०२. कार्यसिद्धिके लिये अपने उपास्यदेवसे प्रार्थना करना तो ठीक है, पर उनपर दबाव डालना, उन्हें शपथ या दोहाई देकर कार्य करनेके लिये विवश करना, उनसे हठ करना सर्वथा अनुचित है। उदाहरणार्थ, 'बजरंगबाण'में हनुमान्जीपर ऐसा ही अनुचित दबाव डाला गया है; जैसे- *'इन्हें मारु,*

तोहि सपथ राम की।', 'सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै।', 'जनकसुता-हरि-दास कहावौ। ता की सपथ, विलंब न लावौ।।', 'उठ, उठ, चलु, तोहि राम दोहाई'। इस तरह दबाव डालनेसे उपास्यदेव प्रसन्न नहीं होते, उल्टे नाराज होते हैं, जिसका पता बादमें लगता है। इसलिये मैं 'बजरंगबाण'के पाठके लिये मना किया करता हूँ। 'बजरंगबाण' गोस्वामी तुलसीदासजीकी रचना नहीं है। वे ऐसी रचना कर ही नहीं सकते।

१०३. रामचरितमानस एक प्रासादिक ग्रन्थ है। जिसको केवल वर्णमालाका ज्ञान है, वह भी यदि अँगुली रखकर रामायणके एक-दो पाठ कर ले तो उसको पढ़ना आ जायगा। वह अन्य पुस्तकें भी पढ़ना शुरू कर देगा।

१०४. रामायणके एक सौ आठ पाठ करनेसे भगवान्के साथ विशेष सम्बन्ध जुड़ता है।

१०५. रामायणका नवाह्न-पारायण आरम्भ होनेपर सूआ-सूतक हो जाय तो कोई दोष नहीं लगता।

१०६. रामायणका पाठ करनेसे बुद्धि विकसित होती है। रामायणका नवाह्न पाठ करनेवाला विद्यार्थी कभी फेल नहीं होता।

१०७. कमरदर्द आदिके कारण कोई लेटकर रामायणका पाठ करना चाहे तो कर सकता है। भावका मूल्य है। भाव पाठमें रहना चाहिये, शरीर चाहे जैसे रहे।

१०८. पुस्तक उल्टी नहीं रखनी चाहिये। इससे उसका निरादर होता है। सभी वस्तुएँ भगवत्स्वरूप होनेसे चिन्मय हैं। अतः किसी भी वस्तुका निरादर नहीं करना चाहिये। किसी आदरणीय वस्तुका निरादर करनेसे वह वस्तु नष्ट हो जाती है अथवा उसमें विकृति आ जाती है, यह मेरा अनुभव है।

* * *

॥ ॐ ॥
668
प्रश्नोत्तरी
स्वामिश्रीशङ्कराचार्यरचित
मणिरत्नमाला
गीताप्रेस, गोरखपुर

प्रकाशक—गोबिन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० १९८५ से २०५७ तक ५,८०,०००
सं० २०५९ इकतालीसवाँ संस्करण १०,०००
योग ५,९०,०००

मूल्य—एक रुपया पचास पैसे

मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
फोन : (०५५१) ३३४७२१; फैक्स ३३६९९७
visit us at:**www.gitapress.org**
e-mail:**gitapres@ndf.vsnl.net.in**

श्रीहरि:

वक्तव्य

श्रीस्वामी शंकराचार्यजीकी प्रश्नोत्तर-मणिमाला बहुत ही उपादेय पुस्तिका है। इसके प्रत्येक प्रश्न और उत्तरपर मननपूर्वक विचार करना आवश्यक है। संसारमें स्त्री, धन और पुत्रादि पदार्थोंके कारण ही मनुष्य विशेषरूपसे बन्धनमें रहता है, इन पदार्थोंसे वैराग्य होनेमें ही कल्याण है, यही समझकर उन्होंने स्त्री, धन और पुत्रादिकी निन्दा की है। स्त्रीके लिये विशेष जोर देनेका कारण भी स्पष्ट है। धन, पुत्रादि छोड़नेवाले भी प्राय: स्त्रियोंमें आसक्त देखे जाते हैं, वास्तवमें यह दोष स्त्रियोंका नहीं है, यह दोष तो पुरुषोंके बिगड़े हुए मनका है; परन्तु मन बड़ा चञ्चल

है, इसलिये संन्यासियोंको तो स्त्रियोंसे हर तरहसे अलग ही रहना चाहिये। जान पड़ता है कि यह पुस्तिका खासकर संन्यासियोंके लिये ही लिखी गयी थी। इसमें बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो सभीके कामकी हैं। अतः उनसे हमलोगोंको पूरा लाभ उठाना चाहिये। स्त्री, पुत्र, धन आदि संसारके सभी पदार्थोंसे यथासाध्य ममताका त्याग करना आवश्यक है।
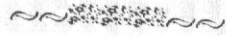
ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

प्रश्नोत्तरी

अपारसंसारसमुद्रमध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति।
गुरो कृपालो कृपया वदैत-
द्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका ।१।

प्रश्न	उत्तर
हे दयामय गुरुदेव! कृपा करके यह बताइये कि अपार संसाररूपी समुद्र-में मुझ डूबते हुएका आश्रय क्या है?	विश्वपति परमात्माके चरणकमलरूपी जहाज।

बद्धो हि को यो विषयानुरागी
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः।
को वास्ति घोरो नरकः स्वदेह-
स्तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति।२।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें बँधा कौन है?	जो विषयोमें आसक्त है।
विमुक्ति क्या है?	विषयोंसे वैराग्य।
घोर नरक क्या है?	अपना शरीर।
स्वर्गका पद क्या है?	तृष्णाका नाश होना।

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः
को मोक्षहेतुः कथितः स एव।
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी
का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा।३।

प्रश्न	उत्तर
संसारको हरनेवाला कौन है?	वेदसे उत्पन्न आत्मज्ञान।
मोक्षका कारण क्या कहा गया है?	वही आत्मज्ञान।
नरकका प्रधान द्वार क्या है?	नारी।
स्वर्गको देनेवाली क्या है?	जीवमात्रकी अहिंसा।

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो
जागर्ति को वा सदसद्विवेकी।
के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि
तान्येव मित्राणि जितानि यानि।४।

प्रश्न	उत्तर
(वास्तवमें) सुखसे कौन सोता है?	जो परमात्माके स्वरूपमें स्थित है।
और कौन जागता है?	सत् और असत्के तत्त्वका जाननेवाला।
शत्रु कौन हैं?	अपनी इन्द्रियाँ; परंतु जो जीती हुई हों तो वही मित्र हैं।

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः
श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः।
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः
किं वामृतं स्यात्सुखदा निराशा।५।

प्रश्न	उत्तर
दरिद्र कौन है?	भारी तृष्णावाला।
और धनवान् कौन है?	जिसे सब तरहसे संतोष है।

प्रश्न	उत्तर
(वास्तवमें) जीते-जी मरा कौन है?	जो पुरुषार्थहीन है।
और अमृत क्या हो सकता है?	सुख देनेवाली निराशा (आशासे रहित होना)।

पाशो हि को यो ममताभिमानः
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री।
को वा महान्धो मदनातुरो यो
मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम्।६।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें फाँसी क्या है?	जो 'मैं' और 'मेरा'पन है।
मदिराकी तरह क्या चीज निश्चय ही मोहित कर देती है?	नारी ही।
और बड़ा भारी अन्धा	

कौन है?	जो कामवश व्याकुल है।
मृत्यु क्या है?	अपनी अपकीर्ति।

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव।
को दीर्घरोगो भव एव साधो
किमौषधं तस्य विचार एव।७।

प्रश्न	उत्तर
गुरु कौन है?	जो केवल हितका ही उपदेश करनेवाला है।
शिष्य कौन है?	जो गुरुका भक्त है, वही।
बड़ा भारी रोग क्या है?	हे साधो! बार-बार जन्म लेना ही।
उसकी दवा क्या है?	परमात्माके स्वरूपका मनन ही।

किं भूषणाद्भूषणमस्ति शीलं
तीर्थं परं किं स्वमनो विशुद्धम्।
किमत्र हेयं कनकं च कान्ता
श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम्।८।

प्रश्न	उत्तर
भूषणोंमें उत्तम भूषण क्या है?	उत्तम चरित्र।
सबसे उत्तम तीर्थ क्या है?	अपना मन जो विशेष रूपसे शुद्ध किया हुआ हो।
इस संसारमें त्यागने योग्य क्या है?	काञ्चन और कामिनी।
सदा (मन लगाकर) सुनने योग्य क्या है?	वेद और गुरुका वचन।

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति
सत्सङ्गतिर्दानविचारतोषाः ।

के सन्ति सन्तोऽखिलवीतरागा
अपास्तमोहाः शिवतत्त्वनिष्ठाः। ९।

प्रश्न	उत्तर
परमात्माकी प्राप्तिके क्या-क्या साधन हैं?	सत्सङ्ग, सात्त्विक दान, परमेश्वरके स्वरूपका मनन और संतोष।
महात्मा कौन हैं?	सम्पूर्ण संसारसे जिनकी आसक्ति नष्ट हो गयी है, जिनका अज्ञान नाश हो चुका है और जो कल्याणरूप परमात्म-तत्त्वमें स्थित हैं।

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता
मूर्खोऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः।

कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत्। १०।

प्रश्न	उत्तर
प्राणियोंके लिये वास्तवमें ज्वर क्या है?	चिन्ता।
मूर्ख कौन है?	जो विचारहीन है।
करने योग्य प्यारी क्रिया क्या है?	शिव और विष्णुकी भक्ति।
वास्तवमें जीवन कौन-सा है?	जो सर्वथा निर्दोष है।

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या
बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै
जितं जगत्केन मनो हि येन। ११।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें विद्या कौन-सी है?	जो परमात्माको प्राप्त करा देनेवाली है।
वास्तविक ज्ञान क्या है?	जो (यथार्थ) मुक्तिका कारण है।
यथार्थ लाभ क्या है?	जो परमात्माकी प्राप्ति है, वही।
जगत्को किसने जीता?	जिसने मनको जीता।

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु।
प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः।१२।

प्रश्न	उत्तर
वीरोंमें सबसे बड़ा वीर कौन है?	जो कामबाणोंसे पीड़ित नहीं होता।
बुद्धिमान्, समदर्शी और धीर पुरुष कौन है?	जो स्त्रियोंके कटाक्षोंसे मोहको प्राप्त न हो।

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ता
दुःखी सदा को विषयानुरागी।
धन्योऽस्तु को यस्तु परोपकारी
कः पूजनीयः शिवतत्त्वनिष्ठः।१३।

प्रश्न	उत्तर
विषसे भी भारी विष कौन है?	सारे विषयभोग।
सदा दुःखी कौन है?	जो संसारके भोगोंमें आसक्त है।
और धन्य कौन है?	जो परोपकारी है।
पूजनीय कौन है?	कल्याणरूप परमात्म-तत्त्वमें स्थित महात्मा।

सर्वास्ववस्थास्वपि किन्न कार्यं
किं वा विधेयं विदुषा प्रयत्नात्।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं
संसारमूलं हि किमस्ति चिन्ता। १४।

प्रश्न	उत्तर
सभी अवस्थाओंमें विद्वानोंको बड़े जतनसे क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये?	संसारसे स्नेह और पाप नहीं करना तथा सद्ग्रन्थोंका पठन और धर्मका पालन करना चाहिये।
संसारकी जड़ क्या है?	(उसका) चिन्तन ही।

विद्वान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा
नार्या पिशाच्या न च वञ्चितो यः।

का शृङ्खला प्राणभृतां हि नारी
दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम्। १५।

प्रश्न	उत्तर
समझदारोंमें सबसे अच्छा समझदार कौन है?	जो स्त्रीरूप पिशाचिनीसे नहीं ठगा गया है।
प्राणियोंके लिये साँकल क्या है?	नारी ही।
श्रेष्ठ व्रत क्या है?	पूर्णरूपसे विनयभाव।

ज्ञातुं न शक्यं च किमस्ति सर्वै-
र्योषिन्मनो यच्चरितं तदीयम्।
का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा
विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा। १६।

प्रश्न	उत्तर
सब किसीके लिये क्या जानना सम्भव नहीं है?	स्त्रीका मन और उसका चरित्र।
सब लोगोंके लिये क्या त्यागना अत्यन्त कठिन है?	बुरी वासना (विषयभोग और पापकी इच्छाएँ)।
पशु कौन है?	जो सद्विद्यासे रहित (मूर्ख) है।

वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयो
मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः।
मुमुक्षुणा किं त्वरितं विधेयं
सत्सङ्गतिर्निर्ममतेशभक्तिः ।१७।

प्रश्न	उत्तर
किन-किनके साथ निवास और संग नहीं करना चाहिये?	मूर्ख, नीच, दुष्ट और पापियोंके साथ।

प्रश्न	उत्तर
मुक्ति चाहनेवालोंको तुरंत क्या करना चाहिये?	सत्संग, ममताका त्याग और परमेश्वरकी भक्ति।

लघुत्वमूलं च किमर्थितैव
गुरुत्वमूलं यदयाचनं च।
जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म
को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः।१८।

प्रश्न	उत्तर
छोटेपनकी जड़ क्या है?	याचना ही।
बड़प्पनकी जड़ क्या है?	कुछ भी न माँगना।
किसका जन्म सराहनीय है?	जिसका फिर जन्म न हो।
किसकी मृत्यु सराहनीय हैं?	जिसकी फिर मृत्यु नहीं होती।

मूकोऽस्ति को वा बधिरश्च को वा
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं
विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी।१९।

प्रश्न	उत्तर
गूँगा कौन है?	जो समयपर उचित वचन कहनेमें समर्थ नहीं है।
और बहिरा कौन है?	जो यथार्थ और हितकर वचन नहीं सुनता।
विश्वासके योग्य कौन नहीं है?	नारी।

तत्त्वं किमेकं शिवमद्वितीयं
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्यग्
देयं परं किं त्वभयं सदैव।२०।

प्रश्न	उत्तर
एक तत्त्व क्या है?	अद्वितीय कल्याण-तत्त्व (परमात्मा)।
सबसे उत्तम क्या है?	जो उत्तम आचरण है।
कौन-सा सुख तज देना चाहिये?	सब प्रकारसे स्त्रीका सुख ही।
देने योग्य उत्तम दान क्या है?	सदा अभय ही।

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा
कामः सकोपानृतलोभतृष्णः।
न पूर्यते को विषयैः स एव
किं दुःखमूलं ममताभिधानम्।२१।

प्रश्न	उत्तर
शत्रुओंमें सबसे बड़ा भारी शत्रु कौन है?	क्रोध, झूठ, लोभ और तृष्णासहित काम।

विषयभोगोंसे कौन तृप्त नहीं होता?	वही काम।
दु:खकी जड़ क्या है?	ममता नामक दोष।

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य
सत्यं च किं भूतहितं सदैव।
किं कर्म कृत्वा न हि शोचनीयं
कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम्।२२।

प्रश्न	उत्तर
मुखका भूषण क्या है?	विद्वत्ता।
सच्चा कर्म क्या है?	सदा ही प्राणियोंका हित करना।
कौन-सा कर्म करके पछताना नहीं पड़ता?	भगवान् शिव और श्रीकृष्णका पूजनरूप कर्म।

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः
क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ।
शल्यं परं किं निजमूर्खतैव
के के ह्युपास्या गुरुदेववृद्धाः।२३।

प्रश्न	उत्तर
किसके नाशमें मोक्ष है?	मनके ही।
किसमें सर्वथा भय नहीं है?	मोक्षमें।
सबसे अधिक चुभनेवाली कौन चीज है?	अपनी मूर्खता ही।
उपासनाके योग्य कौन-कौन हैं?	देवता, गुरु और वृद्ध।

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते
किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात्।

वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं
मुरारिपादाम्बुजचिन्तनं च। २४।

प्रश्न	उत्तर
प्राण हरनेवाले कालके उपस्थित होनेपर अच्छी बुद्धिवालोंको बड़े जतनसे तुरंत क्या करना उचित है?	सुख देनेवाले और मृत्युका नाश करनेवाले भगवान् मुरारिके चरण-कमलोंका तन, मन, वचनसे चिन्तन करना।

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः
कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः।
मातेव का या सुखदा सुविद्या
किमेधते दानवशात्सुविद्या। २५।

प्रश्न	उत्तर
डाकू कौन हैं?	बुरी वासनाएँ।
सभामें शोभा कौन पाता है?	जो अच्छा विद्वान् है।
माताके समान सुख देनेवाली कौन है?	उत्तम विद्या।
देनेसे क्या बढ़ती है?	अच्छी विद्या।

कुतो हि भीतिः सततं विधेया
लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
को वातिबन्धुः पितरश्च के वा
विपत्सहायः परिपालका ये। २६।

प्रश्न	उत्तर
निरन्तर किससे डरना चाहिये?	लोक-निन्दासे और संसाररूपी वनसे।
अत्यन्त प्यारा बन्धु कौन है?	जो विपत्तिमें सहायता करे।
और पिता कौन हैं?	जो सब प्रकारसे पालन-पोषण करें।

बुद्ध्वा न बोध्यं परिशिष्यते किं
शिवप्रसादं सुखबोधरूपम्।
ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या-
त्सर्वात्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे।२७।

प्रश्न	उत्तर
क्या समझनेके बाद कुछ भी समझना बाकी नहीं रहता?	शुद्ध, विज्ञान, आनन्दघन कल्याणरूप परमात्माको।
किसको जान लेनेपर (वास्तवमें) जगत् जाना जाता है?	सर्वात्मरूप परिपूर्ण ब्रह्मके स्वरूपको।

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके
सत्सङ्गतिर्ब्रह्मविचारणा च।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः
को दुर्जयः सर्वजनैर्मनोजः।२८।

प्रश्न	उत्तर
संसारमें दुर्लभ क्या है?	सद्गुरु, सत्सङ्ग, ब्रह्म-विचार, सर्वस्वका त्याग और कल्याणरूप परमात्माका ज्ञान।
सबके लिये क्या जीतना कठिन है?	कामदेव।

पशोः पशुः को न करोति धर्मं
प्राधीतशास्त्रोऽपि न चात्मबोधः।
किन्तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री
के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः।२९।

प्रश्न	उत्तर
पशुओंसे भी बढ़कर पशु कौन है?	शास्त्रका खूब अध्ययन करके जो धर्मका पालन नहीं करता और जिसे

	आत्मज्ञान नहीं हुआ।
वह कौन-सा विष है जो अमृत-सा जान पड़ता है?	नारी।
शत्रु कौन है जो मित्र-सा लगता है?	पुत्र आदि।

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु-
र्दानं परं किञ्च सुपात्रदत्तम्।
कण्ठङ्गतैरप्यसुभिर्न कार्यं
किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा। ३०।

प्रश्न	उत्तर
बिजलीकी तरह क्षणिक क्या है?	धन, यौवन और आयु।
सबसे उत्तम दान कौन-सा है?	जो सुपात्रको दिया जाय।

कण्ठगत प्राण होनेपर भी क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये?	पाप नहीं करना चाहिये और कल्याणरूप परमात्माकी पूजा करनी चाहिये।

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं
संसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम्।
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः
क्वास्था न कार्या सततं भवाब्धौ। ३१।

प्रश्न	उत्तर
रात-दिन विशेषरूपसे क्या चिन्तन करना चाहिये?	संसारका मिथ्यापन और कल्याणरूप परमात्माका तत्त्व।
वास्तवमें कर्म क्या है?	जो भगवान् श्रीकृष्णको प्रिय हो।

सदैव किसमें विश्वास नहीं करना चाहिये?	संसार-समुद्रमें।

कण्ठङ्गता वा श्रवणङ्गता वा
प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला।
तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं
रमेशगौरीशकथेव सद्यः॥ ३२॥

यह प्रश्नोत्तर नामकी मणिरत्नमाला कण्ठमें या कानोंमें जाते ही लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु और उमापति भगवान् शंकरकी कथाकी तरह विद्वानोंके सुन्दर आनन्दको बढ़ावे।